पश्चिम बंगाल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (WBBSE)

कक्षा 9 हिंदी
प्रथम भाषा

अध्याय 20

प्रश्न बैंक

अध्याय 20: स्वामी दयानंद सरस्वती

बिरला एजुकेशन - मुफ्त नोट्स

birlaeducation.org

अध्याय 20: स्वामी दयानंद सरस्वती

सहायक पाठ: साहित्य संचयन

कहानी: पाठ को ऐसे याद रखो

स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म सन् 1824 में गुजरात के टंकारा गाँव में हुआ था। उनके बचपन का नाम मूलशंकर था। उनके पिता करशनजी तिवारी थे। बचपन में अपनी छोटी बहन और चाचा की मृत्यु देखकर उनके मन में वैराग्य जागा। वे सोचने लगे कि जो शरीर मर जाता है, उसकी पूजा से मोक्ष कैसे मिलेगा। सन् 1846 में उन्होंने घर छोड़ दिया और सत्य की खोज में घूमने लगे।

लंबे समय तक घूमने के बाद सन् 1860 में मथुरा में उनकी भेंट स्वामी विरजानंद से हुई। विरजानंद ने उन्हें वेदों का ज्ञान दिया। दयानंद ने समझा कि वेद ही सच्चे ज्ञान का भंडार हैं। उन्होंने वेदों के आधार पर लोगों को धर्म का सही रूप समझाया। उन्होंने कहा कि ईश्वर एक है, निराकार है और सर्वव्यापक है। उन्होंने मूर्तिपूजा, जाति भेद, बाल विवाह और अंधविश्वास का विरोध किया।

सन् 1875 में उन्होंने बंबई में आर्य समाज की स्थापना की और उसके दस नियम बनाए। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश नामक प्रसिद्ध ग्रंथ लिखा। वे स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह और हिंदी भाषा के समर्थक थे। उन्होंने गुरुकुलों की स्थापना पर बल दिया। सन् 1883 में अजमेर में उनका निधन हुआ, पर आर्य समाज आज भी उनके बताए मार्ग पर चल रहा है।

जीवन की प्रमुख घटनाएँ

birlaeducation.org

12 फरवरी, सन् 1824: गुजरात के मोरबी जिले के टंकारा गाँव में जन्म। बचपन का नाम मूलशंकर।

बचपन: बहन और चाचा की मृत्यु देखकर मन में वैराग्य जागा। मूर्तिपूजा से मन हट गया।

सन् 1846: सत्य की खोज में घर छोड़ दिया। देश भर में घूमकर साधु संतों से मिले।

सन् 1860: मथुरा में स्वामी विरजानंद से भेंट हुई। उनसे वेदों का गहरा ज्ञान प्राप्त किया।

10 अप्रैल, सन् 1875: बंबई में आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज के दस नियम बनाए।

सन् 1875: प्रसिद्ध ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश लिखा, जिसमें वेदों पर आधारित धर्म का रूप समझाया।

30 अक्टूबर, सन् 1883: अजमेर में निधन। आर्य समाज आज भी उनके बताए मार्ग पर चल रहा है।

व्यक्तित्व परिचय

स्वामी दयानंद सरस्वती आधुनिक भारत के निर्माताओं में प्रमुख हैं। उनका जन्म सन् 1824 में गुजरात के टंकारा में हुआ था। उन्होंने वेदों के आधार पर धर्म का सही रूप समझाया, आर्य समाज की स्थापना की और मूर्तिपूजा, जाति भेद तथा बाल विवाह का विरोध किया। उनका ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश प्रसिद्ध है।

कठिन शब्द और उनके अर्थ

शब्द	अर्थ
भ्रांति	भ्रम, गलत धारणा
विकृत	बिगड़ा हुआ, बुरा

सर्वव्यापक	जो हर जगह मौजूद हो
घुमंतू	घूमने वाला, घुमक्कड़
पाबंदी	रोक, मनाही
स्फुलिंग	चिनगारी
औचित्य	उचित होने का भाव, अर्थ
भ्रमण	घूमना, यात्रा
सर्वोपरि	सबसे ऊपर, सबसे बड़ा
सहिष्णुता	सहन करने का भाव, सहनशीलता
अतीत	बीता हुआ समय
उद्यत	तैयार, तत्पर

1. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ)

1. स्वामी दयानंद सरस्वती के बचपन का नाम क्या था?

(क) दयानंद

(ख) मूलशंकर

(ग) विरजानंद

(घ) शंकराचार्य

उत्तर: (ख) मूलशंकर

---

2. स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म किस सन् में हुआ था?

(क) सन् 1824

(ख) सन् 1833

(ग) सन् 1875

(घ) सन् 1883

उत्तर: (क) सन् 1824

---

3. स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म कहाँ हुआ था?

(क) मथुरा

(ख) बंबई

(ग) टंकारा, गुजरात

(घ) अजमेर

उत्तर: (ग) टंकारा, गुजरात

---

birlaeducation.org

4. आर्य समाज की स्थापना किस सन् में हुई?

(क) सन् 1828

(ख) सन् 1875

(ग) सन् 1883

(घ) सन् 1860

उत्तर: (ख) सन् 1875

---

5. आर्य समाज की स्थापना किसने की?

(क) राजा राममोहन राय

(ख) स्वामी विवेकानंद

(ग) स्वामी दयानंद सरस्वती

(घ) महात्मा गांधी

उत्तर: (ग) स्वामी दयानंद सरस्वती

---

6. स्वामी दयानंद सरस्वती के गुरु कौन थे?

(क) स्वामी विरजानंद

(ख) रामकृष्ण परमहंस

(ग) स्वामी श्रद्धानंद

(घ) तोतापुरी

birlaeducation.org

उत्तर: (क) स्वामी विरजानंद

---

7. स्वामी दयानंद सरस्वती का प्रसिद्ध ग्रंथ कौन सा है?

(क) गीता रहस्य

(ख) सत्यार्थ प्रकाश

(ग) भारत भारती

(घ) कामायनी

उत्तर: (ख) सत्यार्थ प्रकाश

---

8. स्वामी दयानंद सरस्वती किसके विरोधी थे?

(क) स्त्री शिक्षा के

(ख) मूर्तिपूजा के

(ग) विधवा विवाह के

(घ) हिंदी भाषा के

उत्तर: (ख) मूर्तिपूजा के

---

9. स्वामी दयानंद के अनुसार वेद क्या हैं?

(क) कविताओं की पुस्तक

(ख) सब सत्य विद्याओं की पुस्तक

(ग) इतिहास की पुस्तक

(घ) कथाओं की पुस्तक

उत्तर: (ख) सब सत्य विद्याओं की पुस्तक

---

10. स्वामी दयानंद सरस्वती के दो मूल सिद्धान्त क्या थे?

(क) मूर्तिपूजा और जाति भेद

(ख) एक ईश्वर की उपासना और बिना भेदभाव मानव की सेवा

(ग) व्रत और तीर्थ

(घ) यज्ञ और दान

उत्तर: (ख) एक ईश्वर की उपासना और बिना भेदभाव मानव की सेवा

---

11. स्वामी दयानंद सरस्वती का निधन किस सन् में हुआ?

(क) सन् 1875

(ख) सन् 1883

(ग) सन् 1860

(घ) सन् 1824

उत्तर: (ख) सन् 1883

birlaeducation.org

---

12. स्वामी दयानंद ने किस भाषा के प्रचार पर बल दिया?

(क) संस्कृत

(ख) हिंदी

(ग) अंग्रेजी

(घ) फारसी

उत्तर: (ख) हिंदी

---

2. रिक्त स्थान भरो

1. स्वामी दयानंद सरस्वती के बचपन का नाम _____ था।

उत्तर: मूलशंकर

---

2. स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म सन् _____ में टंकारा में हुआ था।

उत्तर: 1824

---

3. स्वामी दयानंद के गुरु का नाम _____ था।

उत्तर: स्वामी विरजानंद

---

4. आर्य समाज की स्थापना सन् _____ में हुई थी।

उत्तर: 1875

---

5. स्वामी दयानंद का प्रसिद्ध ग्रंथ _____ है।

उत्तर: सत्यार्थ प्रकाश

---

6. स्वामी दयानंद के अनुसार ईश्वर _____ है और सर्वव्यापक है।

उत्तर: निराकार

---

7. स्वामी दयानंद ने _____ का विरोध किया था।

उत्तर: मूर्तिपूजा

---

8. स्वामी दयानंद _____ विवाह के समर्थक थे।

उत्तर: विधवा

---

9. आर्य समाज के नियमों की संख्या _____ है।

उत्तर: दस

birlaeducation.org

---

10. स्वामी दयानंद सरस्वती का निधन सन् _____ में अजमेर में हुआ।

उत्तर: 1883

---

3. सही / गलत

1. स्वामी दयानंद सरस्वती मूर्तिपूजा के समर्थक थे।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: स्वामी दयानंद सरस्वती मूर्तिपूजा के विरोधी थे।

---

2. आर्य समाज की स्थापना सन् 1875 में हुई थी।

उत्तर: सही।

---

3. स्वामी दयानंद सरस्वती के बचपन का नाम मूलशंकर था।

उत्तर: सही।

---

4. स्वामी दयानंद ने स्त्री शिक्षा का विरोध किया था।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: स्वामी दयानंद स्त्री शिक्षा के समर्थक थे।

---

5. स्वामी दयानंद के अनुसार वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं।

उत्तर: सही।

---

6. स्वामी दयानंद बाल विवाह के समर्थक थे।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: स्वामी दयानंद बाल विवाह के विरोधी थे।

---

7. स्वामी दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ लिखा था।

उत्तर: सही।

---

8. स्वामी दयानंद के अनुसार ईश्वर को केवल ध्यान और धारणा से पाया जा सकता है।

उत्तर: सही।

---

9. स्वामी दयानंद ने जाति भेद का समर्थन किया था।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: स्वामी दयानंद ने जाति भेद का विरोध किया था।

---

10. स्वामी दयानंद का निधन अजमेर में हुआ था।

उत्तर: सही।

birlaeducation.org

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (SAQ)

1. स्वामी दयानंद सरस्वती में किसके प्रति घनिष्ठ निष्ठा थी? पाठ्यपुस्तक

स्वामी दयानंद सरस्वती में सत्य के प्रति घनिष्ठ निष्ठा थी। वे जीवन भर सत्य की खोज और सत्य के प्रचार में लगे रहे।

---

2. स्वामी दयानंद सरस्वती ने किसके उद्धार के लिए कार्य किया? पाठ्यपुस्तक

स्वामी दयानंद सरस्वती ने धर्म, राजनीति, समाज और संस्कृति के उद्धार के लिए कार्य किया। वे पूरे भारत में घूम घूमकर इन क्षेत्रों में सुधार लाने का काम करते रहे।

---

3. स्वामी दयानंद के अनुसार ईश्वर को किस विधि से प्राप्त किया जा सकता है? पाठ्यपुस्तक

स्वामी दयानंद के अनुसार ईश्वर को ध्यान और धारणा की विधि से प्राप्त किया जा सकता है। ईश्वर सर्वव्यापक और निराकार है, उसे तर्क से भी जाँचा जा सकता है।

---

4. वेद हमें क्या बताते हैं? पाठ्यपुस्तक

वेद हमें बताते हैं कि सभी देवों का देव परमात्मा मूलतः एक है और उसके अनेक रूप नहीं हो सकते। परमात्मा ही सर्वोपरि देव है।

---

5. पाणिनी के अनुसार तप क्या है? पाठ्यपुस्तक

पाणिनी के अनुसार तप चिंतन मनन और आलोचना है। इसके अंतर्गत विश्व की रचना और उसके कर्ता पर विचार किया जाता है और उसे तर्क तथा ज्ञान के नियमों से जाँचा जाता है।

---

6. स्वामी दयानंद के दो मूल सिद्धान्त क्या थे? पाठ्यपुस्तक

स्वामी दयानंद के दो मूल सिद्धान्त थे: एक, एक ईश्वर की उपासना; दो, जाति, रंग और संप्रदाय के भेद के बिना मानव की सेवा।

---

7. स्वामी दयानंद ने किस समाज की स्थापना की? पाठ्यपुस्तक

स्वामी दयानंद ने सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज के लिए उन्होंने दस नियम भी बनाए।

---

8. स्वामी जी का कौन सा सबक हमेशा मस्तिष्क में रहना चाहिए? पाठ्यपुस्तक

स्वामी जी का यह सबक हमेशा मस्तिष्क में रहना चाहिए कि यदि हम अतीत से सबक नहीं लेंगे तो हमें बार बार अतीत में जीना पड़ेगा।

---

9. धर्म का मार्गदर्शक क्या था? पाठ्यपुस्तक

धर्म का मार्गदर्शक तर्क का नियम था। स्वामी दयानंद कहते थे कि धर्म को तर्क और ज्ञान से जाँचा जाना चाहिए।

---

10. स्वामी दयानंद के अनुसार परमात्मा में विश्वास करने वाले को किसकी समानता में विश्वास करना पड़ेगा? पाठ्यपुस्तक

birlaeducation.org

स्वामी दयानंद के अनुसार परमात्मा में विश्वास करने वाले को सभी व्यक्तियों और नारियों की समानता में विश्वास करना पड़ेगा।

---

11. स्वामी जी के हृदय में किसके विरुद्ध आग थी? पाठ्यपुस्तक

स्वामी जी के हृदय में सामाजिक अन्याय के विरुद्ध आग थी। वे जाति भेद, बाल विवाह और स्त्रियों पर लगी पाबंदियों के विरुद्ध थे।

---

12. वेदों में परमात्मा के बारे में क्या कहा गया है? पाठ्यपुस्तक

वेदों में कहा गया है कि परमात्मा एक है और उसके अनेक रूप नहीं हो सकते। परमात्मा ही सर्वोपरि देव है। वह अजन्मा, अनंत, अनादि, निराकार, अजर, अमर और सृष्टिकर्ता है।

---

13. स्वामी दयानंद सरस्वती का विश्वास किसमें था? पाठ्यपुस्तक

स्वामी दयानंद का विश्वास एक मानव, एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर और एक ही पूजा पद्धति में था।

---

14. असहिष्णुता भारत के लिए विनाशकारी क्यों रही है? पाठ्यपुस्तक

स्वामी दयानंद ने कहा कि हम भारतवासी जाति, धर्म और भाषा के आधार पर आपस में लड़ते रहे हैं। आपसी लड़ाई के कारण ही हम गुलामी में फँसे। यदि हमने सहिष्णुता से काम लिया होता तो भारत का विनाश नहीं होता।

---

15. स्वामी दयानंद के अनुसार अगर हम अतीत से सबक नहीं लेंगे तो क्या होगा? पाठ्यपुस्तक

स्वामी दयानंद के अनुसार अगर हम अतीत से सबक नहीं लेंगे तो हमें बार बार अतीत में जीना पड़ेगा। हमें आपसी मतभेदों को मिटाकर एक परमात्मा में विश्वास करना चाहिए।

---

16. स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म कब और कहाँ हुआ था? अतिरिक्त

स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म 12 फरवरी, सन् 1824 में गुजरात के मोरबी जिले के टंकारा गाँव में हुआ था।

---

17. स्वामी दयानंद ने घर क्यों छोड़ा था? अतिरिक्त

बचपन में बहन और चाचा की मृत्यु देखकर उनके मन में वैराग्य जागा। वे सत्य की खोज करना चाहते थे, इसलिए सन् 1846 में उन्होंने घर छोड़ दिया।

---

18. स्वामी विरजानंद से स्वामी दयानंद को क्या मिला? अतिरिक्त

मथुरा में स्वामी विरजानंद से भेंट होने पर दयानंद को वेदों का गहरा ज्ञान मिला। विरजानंद ने उन्हें वेदों के अध्ययन की प्रेरणा दी।

---

19. सत्यार्थ प्रकाश क्या है? अतिरिक्त

सत्यार्थ प्रकाश स्वामी दयानंद का प्रसिद्ध ग्रंथ है। इसमें उन्होंने वेदों पर आधारित धर्म का सही रूप समझाया है और अंधविश्वासों का खंडन किया है।

---

20. स्वामी दयानंद ने किन कुरीतियों का विरोध किया? अतिरिक्त

स्वामी दयानंद ने मूर्तिपूजा, जाति भेद, बाल विवाह, छुआछूत और अंधविश्वास का विरोध किया। वे विधवा विवाह और स्त्री शिक्षा के समर्थक थे।

birlaeducation.org

---

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (LAQ)

1. भारत के उत्थान के लिए स्वामी दयानंद सरस्वती ने क्या सुझाव दिए? पाठ्यपुस्तक

स्वामी दयानंद ने भारत के उत्थान के लिए आत्मिक उन्नति और सामाजिक सुधार के सुझाव दिए। उन्होंने कहा कि यदि हम परमात्मा में विश्वास करते हैं तो हमें सभी नर नारियों की समानता में विश्वास करना होगा। विश्व में किसी पर यह पाबंदी नहीं लगाई जा सकती कि वह वेद न पढ़ सके। किसी को भी आध्यात्मिक क्रियाओं से रोका नहीं जाना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को सत्य की सिद्धि के लिए सर्वोपरि अवसर मिलना चाहिए। हम राष्ट्र को तभी सबल बना सकते हैं जब मानव द्वारा बनाए गए भेदभावों को समाप्त कर दें। यदि हम अतीत से सबक नहीं लेंगे तो हमें बार बार अतीत में जीना पड़ेगा। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उन्होंने सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना की।

---

2. स्वामी दयानंद द्वारा समाज सुधार के लिए दिए गए उपायों पर विचार करें। पाठ्यपुस्तक

स्वामी दयानंद ने समाज सुधार के लिए कई उपाय दिए। उन्होंने कहा कि नर नारी की समानता का नियम अपनाया जाए। किसी को जाति, धर्म या लिंग के आधार पर वेद पढ़ने या गायत्री मंत्र का जाप करने से रोका न जाए। सबको आध्यात्मिक क्रियाओं का अधिकार मिले। समाज में फैले भेदभाव मिटाए जाएँ, तभी राष्ट्र सबल बनेगा। उन्होंने मूर्तिपूजा, जाति भेद, बाल विवाह और

अंधविश्वास का विरोध किया। उन्होंने स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह और गुरुकुल शिक्षा पर बल दिया। आर्य समाज के दस नियमों में उन्होंने सत्य ग्रहण करने, अविद्या का नाश करने और संसार का उपकार करने का संदेश दिया।

---

3. स्वामी दयानंद सरस्वती के धर्म संबंधी विचारों को पठित पाठ के आधार पर लिखें। पाठ्यपुस्तक

स्वामी दयानंद के अनुसार ईश्वर सर्वव्यापक है, निराकार है और सर्वोपरि है। उसकी सत्ता को अनुभव किया जा सकता है और तर्क के आधार पर जाँचा जा सकता है। ईश्वर एक है, हम सब उसकी संतान हैं, तो फिर भेदभाव क्यों, जाति प्रथा क्यों और नारियों पर अनेक पाबंदियाँ क्यों। मनुष्य होने के नाते प्रत्येक को आध्यात्मिक आराधना का अधिकार है। वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं। वेदों का पढ़ना पढ़ाना सब आर्यों का परम धर्म है। धर्म का मार्गदर्शक तर्क का नियम है। ईश्वर को ध्यान और धारणा की विधि से प्राप्त किया जा सकता है। उनका विश्वास एक मानव, एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर और एक ही पूजा पद्धति में था।

---

4. समाज सुधारक के तौर पर स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा किए गए कार्यों का उल्लेख करें। पाठ्यपुस्तक

स्वामी दयानंद ऐसे समय में आए जब भारत में अंधविश्वास फैला हुआ था और अनेक परंपराएँ विकृत हो रही थीं। उन्होंने वेदों के आधार पर लोगों को धर्म का सही रूप समझाया। उन्होंने मूर्तिपूजा, जाति भेद, बाल विवाह और छुआछूत का विरोध किया। उन्होंने नर नारी की समानता का नियम दिया और कहा कि किसी को वेद पढ़ने से रोका नहीं जा सकता। उन्होंने स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह का समर्थन किया। सन् 1875 में उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की और उसके दस नियम बनाए। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश लिखा और गुरुकुल शिक्षा पर बल दिया। आज भी आर्य समाज उनके बताए मार्ग पर चलकर आत्मिक और सामाजिक उन्नति का कार्य कर रहा है।

---

birlaeducation.org

5. सामाजिक तथा व्यक्ति के उत्थान के लिए स्वामी दयानंद ने भारतीयों से किन बातों को अपनाने को कहा? पाठ्यपुस्तक

स्वामी दयानंद ने कहा कि व्यक्ति और समाज के उत्थान के लिए हमें सत्य को ग्रहण करना चाहिए और असत्य को छोड़ देना चाहिए। सब काम धर्म के अनुसार सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिए। संसार का उपकार करना ही समाज का मुख्य उद्देश्य है। सबसे प्रेमपूर्वक और धर्मानुसार व्यवहार करना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए। प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट नहीं रहना चाहिए, सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम का पालन करना चाहिए। नर नारी की समानता अपनानी चाहिए और भेदभाव मिटाना चाहिए।

---

6. मूर्तिपूजा के प्रचलन के बारे में स्वामी दयानंद सरस्वती ने क्या बताया है? पाठ्यपुस्तक

स्वामी दयानंद ने बताया कि भारतीय संस्कृति में ईश्वर तक पहुँचने के लिए लोग जलाशयों, नदियों, पेड़, पर्वतों और ग्रहों की पूजा किया करते थे। इसी क्रम में कुछ लोग मिट्टी और पत्थर की प्रतिमाओं की भी पूजा करने लगे, क्योंकि हमने ईश्वर तक पहुँचने के लिए सभी मार्गों को अपनाया। इसी कारण से मूर्तिपूजा का प्रचलन हो गया। लेकिन वेदों के अनुसार परमात्मा एक है, निराकार है और उसके अनेक रूप नहीं हो सकते। इसलिए मूर्तिपूजा वेदों के अनुसार सही नहीं है। स्वामी जी ने लोगों को वेदों की ओर लौटने का संदेश दिया।

---

7. वेदों में परमात्मा के बारे में क्या कहा गया है? पाठ्यपुस्तक

वेदों में परमात्मा के बारे में कहा गया है कि परमात्मा एक है और उसके अनेक रूप नहीं हो सकते। परमात्मा ही सर्वोपरि देव है। वह अजन्मा, अनंत, अनादि, निराकार, अजर, अमर और सृष्टिकर्ता है। वेद हमें बताते हैं कि सभी देवों का देव परमात्मा मूलतः

एक है। वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं। वेदों का पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। स्वामी दयानंद ने वेदों के इसी ज्ञान के आधार पर लोगों को धर्म का सही रूप समझाया और मूर्तिपूजा तथा जाति भेद का विरोध किया।

---

8. स्वामी दयानंद सरस्वती का जीवन परिचय लिखिए। अतिरिक्त

स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म 12 फरवरी, सन् 1824 में गुजरात के टंकारा गाँव में हुआ था। उनके बचपन का नाम मूलशंकर था। बहन और चाचा की मृत्यु देखकर उनके मन में वैराग्य जागा और सन् 1846 में उन्होंने घर छोड़ दिया। सन् 1860 में मथुरा में उनकी भेंट स्वामी विरजानंद से हुई, जिनसे उन्होंने वेदों का ज्ञान प्राप्त किया। सन् 1875 में उन्होंने बंबई में आर्य समाज की स्थापना की और सत्यार्थ प्रकाश लिखा। उन्होंने मूर्तिपूजा, जाति भेद, बाल विवाह और अंधविश्वास का विरोध किया तथा स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह का समर्थन किया। 30 अक्टूबर, सन् 1883 को अजमेर में उनका निधन हुआ।

---

9. आर्य समाज की स्थापना कब और क्यों हुई? अतिरिक्त

आर्य समाज की स्थापना 10 अप्रैल, सन् 1875 को बंबई में स्वामी दयानंद सरस्वती ने की थी। उस समय भारत में अंधविश्वास, मूर्तिपूजा, जाति भेद और बाल विवाह जैसी कुरीतियाँ फैली हुई थीं। स्वामी जी वेदों के आधार पर धर्म का सही रूप लोगों को समझाना चाहते थे। आर्य समाज का उद्देश्य आत्मिक, शारीरिक और सामाजिक उन्नति करना था। उन्होंने आर्य समाज के दस नियम बनाए, जिनमें सत्य ग्रहण करना, अविद्या का नाश करना, विद्या की वृद्धि करना और संसार का उपकार करना शामिल है।

---

10. आर्य समाज के दस नियमों को अपने शब्दों में लिखिए। पाठ्यपुस्तक

आर्य समाज के दस नियम इस प्रकार हैं। पहला, सब सत्य विद्या का आदि मूल परमेश्वर है। दूसरा, ईश्वर सच्चिदानंद स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी चाहिए। तीसरा, वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं। चौथा, सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सदा तैयार रहना चाहिए। पाँचवाँ, सब काम धर्म के अनुसार करने चाहिए। छठा, संसार का उपकार करना ही समाज का मुख्य उद्देश्य है। सातवाँ, सबसे प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। आठवाँ, अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए। नवाँ, सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। दसवाँ, सब मनुष्यों को सर्वहितकारी नियमों का पालन करना चाहिए।

---

11. स्वामी दयानंद के अनुसार नर नारी की समानता का क्या अर्थ है? पाठ्यपुस्तक

स्वामी दयानंद के अनुसार यदि हम परमात्मा में विश्वास करते हैं तो हमें सभी नर नारियों की समानता में विश्वास करना पड़ेगा। ईश्वर एक है और हम सब उसकी संतान हैं, इसलिए नारियों पर पाबंदियाँ लगाना गलत है। किसी पर यह पाबंदी नहीं लगाई जा सकती कि वह वेद न पढ़ सके या गायत्री मंत्र का जाप न कर सके। स्वामी जी ने स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि समाज के उत्थान के लिए नारी और पुरुष दोनों को समान अवसर मिलने चाहिए। यही उनका समानता का नियम था।

---

12. स्वामी दयानंद को आधुनिक भारत का निर्माता क्यों कहा जाता है? पाठ्यपुस्तक

स्वामी दयानंद को आधुनिक भारत का निर्माता इसलिए कहा जाता है, क्योंकि वे ऐसे समय में आए जब भारत अंधविश्वासों से घिरा हुआ था। उन्होंने धर्म, राजनीति, समाज और संस्कृति के उद्धार के लिए पूरे भारत में घूम घूमकर कार्य किया। उन्होंने वेदों के आधार पर धर्म का सही रूप समझाया और मूर्तिपूजा, जाति भेद तथा बाल विवाह का विरोध किया। उन्होंने स्त्री शिक्षा, विधवा

biharboardeducation.org

विवाह और हिंदी भाषा को बढ़ावा दिया। आर्य समाज की स्थापना करके उन्होंने समाज सुधार का संगठित कार्य शुरू किया। उनके विचारों ने भारतीयों में आत्मसम्मान और नई चेतना जगाई।

---

13. स्वामी दयानंद के जीवन की किस घटना ने उन्हें वैराग्य की ओर मोड़ा? अतिरिक्त

स्वामी दयानंद के बचपन में दो घटनाओं ने उन्हें गहराई से प्रभावित किया। पहले उनकी छोटी बहन की मृत्यु हुई और फिर उनके चाचा की मृत्यु हुई। इन मौतों को देखकर उनके मन में प्रश्न उठा कि जो शरीर मर जाता है, उसकी पूजा से मोक्ष कैसे मिल सकता है। उन्हें लगा कि मूर्तिपूजा से सच्चा ज्ञान नहीं मिलता। इसी विचार ने उनके मन में वैराग्य जगा दिया। सत्य की खोज के लिए उन्होंने सन् 1846 में घर छोड़ दिया और देश भर में घूमने लगे।

---

14. स्वामी दयानंद के अनुसार धर्म का मार्गदर्शक क्या है? स्पष्ट करें। पाठ्यपुस्तक

स्वामी दयानंद के अनुसार धर्म का मार्गदर्शक तर्क का नियम है। वे कहते थे कि धर्म को आँख बंद करके नहीं मानना चाहिए, उसे तर्क और ज्ञान से जाँचना चाहिए। पाणिनी के अनुसार तप का अर्थ है चिंतन मनन और आलोचना। विश्व की रचना और उसके कर्ता पर विचार करके उसे तर्क के नियमों से जाँचा जाता है। परम सत्य को हृदय, ज्ञान और इच्छा से समझा जा सकता है। इसलिए स्वामी जी ने अंधविश्वास का विरोध किया और वेदों के ज्ञान को तर्क की कसौटी पर परखने का संदेश दिया।

---

15. स्वामी दयानंद ने शिक्षा के क्षेत्र में क्या योगदान दिया? अतिरिक्त

स्वामी दयानंद ने शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा योगदान दिया। उन्होंने कहा कि अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए। उन्होंने स्त्री शिक्षा पर बल दिया और कहा कि नारियों को भी वेद पढ़ने का अधिकार है। उन्होंने गुरुकुलों की स्थापना पर बल दिया, जहाँ विद्यार्थी गुरु के साथ रहकर वेदों और संस्कृत का अध्ययन करते थे। उन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार पर बल दिया, ताकि आम लोग ज्ञान को अपनी भाषा में समझ सकें। उनके प्रयासों से आर्य समाज ने देश भर में अनेक विद्यालय और गुरुकुल खोले।

birlaeducation.org

---

16. स्वामी दयानंद के विचारों की आज के समय में प्रासंगिकता बताइए। अतिरिक्त

स्वामी दयानंद के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। आज भी समाज में जाति भेद, अंधविश्वास और स्त्रियों के प्रति भेदभाव देखने को मिलता है। स्वामी जी का संदेश था कि सब मनुष्य समान हैं और सबको शिक्षा तथा धर्म का समान अधिकार है। उनका सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने का नियम आज भी हमें अंधविश्वास से बचाता है। उनकी शिक्षा कि अतीत से सबक न लेने पर हमें बार बार अतीत में जीना पड़ता है, आज भी सच है। आर्य समाज आज भी उनके बताए मार्ग पर शिक्षा और समाज सेवा का कार्य कर रहा है।

---

17. स्वामी दयानंद के अनुसार परमात्मा कैसा है? पाठ्यपुस्तक

स्वामी दयानंद के अनुसार परमात्मा सच्चिदानंद स्वरूप है। वह निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अनंत, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है। ईश्वर एक है और हम सब उसकी संतान हैं। उसे ध्यान और धारणा की विधि से प्राप्त किया जा सकता है और तर्क के आधार पर उसकी सत्ता को जाँचा जा सकता है।

---

18. स्वामी दयानंद ने वेदों को इतना महत्व क्यों दिया? अतिरिक्त

स्वामी दयानंद ने वेदों को इसलिए महत्व दिया, क्योंकि उनके अनुसार वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं। वेदों में परमात्मा के बारे में कहा गया है कि वह एक है, निराकार है और सर्वोपरि है। वेदों के ज्ञान से ही धर्म के सही रूप को समझा जा सकता है। उस

समय समाज में फैले अंधविश्वास और मूर्तिपूजा का खंडन वेदों के आधार पर ही किया जा सकता था। इसलिए स्वामी जी ने 'वेदों की ओर लौटो' का नारा दिया। उन्होंने कहा कि वेदों का पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

---

19. स्वामी दयानंद के निधन के बारे में लिखिए। अतिरिक्त

स्वामी दयानंद सरस्वती का निधन 30 अक्टूबर, सन् 1883 को अजमेर में हुआ था। अपने जीवन के अंतिम समय तक वे धर्म प्रचार और समाज सुधार के कार्य में लगे रहे। उनके निधन के बाद भी आर्य समाज ने उनके बताए मार्ग पर चलना जारी रखा। आज देश विदेश में आर्य समाज उनके विचारों के अनुसार आत्मिक और सामाजिक उन्नति का कार्य कर रहा है। उनके ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश और आर्य समाज के दस नियम आज भी लोगों को प्रेरणा देते हैं।

---

20. स्वामी दयानंद और राजा राममोहन राय के सुधार कार्यों में क्या समानता है? अतिरिक्त

स्वामी दयानंद और राजा राममोहन राय दोनों ही समाज सुधारक थे। दोनों ने मूर्तिपूजा और जाति भेद का विरोध किया। दोनों एक ईश्वर में विश्वास करते थे। दोनों ने स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह का समर्थन किया। दोनों ने अंधविश्वास के विरुद्ध तर्क और ज्ञान का संदेश दिया। दोनों ने समाज सुधार के लिए संस्थाएँ बनाईं: दयानंद ने आर्य समाज और राममोहन राय ने ब्रह्म समाज। दोनों को आधुनिक भारत का निर्माता कहा जाता है।

---

birlaeducation.org